रुचिरा

प्रथमो भागः

षष्ठवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्



विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

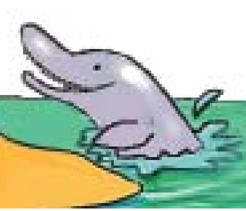
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां,



संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नवदेहली | निदेशकः
20 नवम्बर 2006 | राष्ट्रियशैक्षिककानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्



पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अर्कनाथ चौधरी, *प्रोफ़ेसर,* राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर कैंपस, जयपुर।

राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रवाचक* (संस्कृत), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

वासुदेव शास्त्री, *संस्कृत प्रभारी* (सेवानिवृत्त), एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर।

रामास्वामी आयंगर, *निदेशक* (अवकाश प्राप्त), चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन, बेंगलूरु।

दु:शासन ओझा, *प्राचार्य,* केंद्रीय विद्यालय, पुरी, ओड़ीशा।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड।

पुरुषोत्तम मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), रा.बा.मा.बि., कादीपुर, दिल्ली।

संजू मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), ए.पी.जे. स्कूल, सैक्टर 16-ए, नोएडा।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।



पाठ्यपुस्तक पुनरीक्षण समिति

राधावल्लभ त्रिपाठी, *कुलपति*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जनकपुरी, नयी दिल्ली।

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली।

उमाशंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सुरेश चन्द्र शर्मा, *निदेशक*, दिल्ली संस्कृत अकादमी, झंडेवालान, नयी दिल्ली।

पंकज कुमार मिश्र, *वरिष्ठ प्रवक्ता* (संस्कृत), सेंट स्टीफ़ेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम.वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, गीता कालोनी, दिल्ली।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

सुगन्ध पाण्डेय, टी.जी.टी. (संस्कृत), केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

रणजित बेहेरा *(समन्वयक)*, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय–विशेषज्ञों एवं शिक्षकों विशेषतः प्रोफ़ेसर राजेन्द्र मिश्र, *पूर्व कुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी; इच्छाराम द्विवेदी, *प्रवाचक*, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली एवं नारायण दाश, *शिक्षक* (संस्कृत), सर्वकारीय उच्च विद्यालय, गुम्मा, गजपति, ओड़ीशा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् डॉ. हर्षदेव माधव के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य–सामग्री ली गई है।

पुस्तक की निर्माण–योजना से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के समन्वयक व उनके विभागीय सहयोगी कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* एवं कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रवाचक* (संस्कृत) साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक निर्माण में सहयोग के लिए परसराम कौशिक, *प्रभारी*, कंप्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; आलोक कुमार शर्मा, *शोध सहायक* तथा *डी.टी.पी. ऑपरेटर* नरेन्द्र कुमार वर्मा, राजीव एवं कमलेश आर्या धन्यवाद के पात्र हैं।



भूमिका

भारत एक बहुरंगी राष्ट्र है। ऐसे में कोई भी पाठ्यपुस्तक एकरंगी और सपाट नहीं हो सकती। शिक्षाशास्त्र का विमर्श भी यह मानता है कि अध्ययन-अध्यापन के क्रम में विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि एवं परिवेश को अगर ठीक तरीके से शामिल नहीं किया जाता तो वह ज्ञानात्मक स्तर पर बोझिल हो जाता है। 1993 में यशपाल समिति ने अपनी रिपोर्ट (*शिक्षा बिना बोझ के*) में इसकी ओर ध्यान दिलाया है। इसके अनुसार सीखने-सिखाने के क्रम में विद्यार्थियों के सन्दर्भ को शामिल किया जाना केन्द्रित महत्त्व रखता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) भी सुझाती है कि बच्चे-बच्चियों के स्कूली जीवन को बाहर की दुनिया से जीवंत रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

संस्कृत की **रुचिरा** शृंखला की तीनों पुस्तकें उपरोक्त वैचारिक आधार पर विकसित की गई है। इस शृंखला की पहली पुस्तक **रुचिरा प्रथमो भागः** आपके सामने प्रस्तुत है। अपने नाम के अनुरूप इसे रुचिकर बनाने का यथासंभव प्रयास किया गया है। पुस्तक-निर्माण का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की विद्यार्थियों की क्षमता के विकास में यह सहायक हो। यहाँ संस्कृत भाषा-शिक्षण पर बल है, न कि कृत्रिम रूप से या आनुषंगिक रूप से नैतिक मूल्य देने के माध्यम के रूप में संस्कृत सिखाने का प्रयास। उस प्रक्रिया में वस्तुतः संस्कृत भाषा-शिक्षण गौण हो जाता है।

संस्कृत भाषा जितनी ही पुरातन है, उतनी ही वह अपने को चिर नवीन भी बनाती आई है। विशाल वैदिक वाङ्मय संस्कृत काव्य की अमूल्य निधि है। कालिदास, भवभूति, माघ, भास, बाणभट्ट, भर्तृहरि जैसे महान् रचनाकारों की कृतियाँ संस्कृत की उदात्तता का परिचय देती हैं। इनके अलावा बहुत ऐसे अज्ञात कवि हुए हैं जिन्होंने सामान्य जन की छोटी-छोटी इच्छाओं, सपनों एवं कठिनाइयों को भी स्वर दिया है। संस्कृत के आधुनिक लेखन में यह लोकधारा और मुखर हुई है। यही नहीं संस्कृत वर्तमान जीवन और हमारे संसार को समझने पहचानने के लिये भी एक अच्छा माध्यम बनने की क्षमता रखती है। इसलिए **'रुचिरा'** शृंखला में तीनों पुस्तकों में आप क्रमशः साहित्य में चली आ रही विविध धाराओं की छवियाँ पाएँगे। इसमें कुछ दूसरी भाषाओं से अनूदित अंश भी लिए गए हैं।

रुचिरा प्रथमो भागः में कुल 15 पाठ हैं। इनमें पाँच पद्यपाठ हैं और शेष गद्यपाठ। पद्यपाठों में विविधता है। *वृक्षाः* और *मातुलचन्द्रः* शीर्षक से दो गीत हैं जो बच्चों को पसंद



आएँगे। *कृषिका: कर्मवीरा:* शीर्षक गीत में भारत के स्त्री एवं पुरुष किसान दोनों की बात की गई है। सामान्य तौर पर स्त्री को किसान के रूप में नहीं देखा जाता, जबकि वास्तविकता यह है कि खेती के अधिकांश कामों में स्त्रियों का श्रम लगता है। *लोकमङ्गलम्* ऐसा पद्यपाठ है जिसमें वेद, उपनिषद् और लौकिक साहित्य से लिए गए श्लोक हैं। यह पाठ सब लोगों को संबोधित करता है, न कि किसी विशेष, वर्ग, जाति, धर्म या लिङ्ग के लोगों को। सम्पूर्ण मानव जगत् ही नहीं, इसकी परिधि में सम्पूर्ण चराचर ब्रह्माण्ड है। *सूक्तिस्तवक* पाठ में परम्परा से चली आ रही सूक्तियों का संकलन इस प्रकार किया गया है कि वे विद्यार्थियों में जीवन की बँधी-बँधाई दृष्टि देने का माध्यम न बनें। उदाहरण के तौर पर पहली ही सूक्ति बताती है कि यदि बच्ची/बच्चा भी उचित बात कहे तो उसे बड़ों को ग्रहण करना चाहिए। भाव यह कि वयस्क केन्द्रित ज्ञान मात्र की प्रतिष्ठा पाठ्यपुस्तक द्वारा न हो, इसका ध्यान रखा गया है।

गद्यात्मक पाठों में तीन कथाएँ हैं, दो निबन्ध पाठ हैं और दो संवादात्मक पाठ। *बकस्य प्रतीकार:*, *दशम: त्वम् असि* और *अहह आ: च* शीर्षक तीन कथाएँ हैं। *बकस्य प्रतीकार:* कथा लोकप्रचलित है। सम्भव है कि विद्यार्थियों ने अपनी घर-बाहर की भाषाओं में इस कथा के विविध संस्करण सुने-पढ़े होंगे। *दशम: त्वम् असि* कथा में एक पथिक बच्चों को गिनती गिनने में सहयोग करता है। यहाँ यह आशय कदापि नहीं है कि बच्चे मूर्ख हैं और उनकी तथाकथित समस्याओं का समाधान वयस्क ही करते हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से लेकर व्यवहार तक में बच्चे-बच्चियों तथा वयस्कों की भूमिका सहयोगी की होती है। *अहह आ: च* एक कश्मीरी लोककथा है। लोकबुद्धि सत्ता और उसके शोषणतन्त्र को चुनौती देती है, यह इस पाठ से उभरकर साफ आता है।

निबंधात्मक दो पाठ हैं *समुद्रतट:* और *पुष्पोत्सव:*। समुद्रतट केवल पर्यटन स्थल नहीं है। यह आजीविका से भी जुड़ा है, इसका संकेत इस पाठ में मिलता है। *पुष्पोत्सव:* (फूल वालों की सैर) एक ऐसा उत्सव है जो भारत की मिली-जुली संस्कृति का प्रतीक है। हालाँकि यह मेला बड़े पैमाने पर नहीं मनाया जाता, परन्तु यह महत्त्वपूर्ण है। यह पाठ संसकृत का समकालीन जीवन से भी जुड़ाव भी प्रदर्शित करता है। संवादात्मक पाठों में *क्रीडास्पर्धा* पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में ही है। इसमें बच्चे स्कूल में होनेवाले खेल की प्रतियोगिताओं की चर्चा करते हैं। ये जो बच्चे हैं वे समाज के विभिन्न समुदायों के हैं। उनमें पूरन नाम के एक बच्चे की विशेष आवश्यकताएँ हैं। अभी तक संस्कृत में विशेष आवश्यकतावालों के लिए विकलांग शब्द का प्रयोग किया जाता रहा है। परन्तु इस शब्द से हीनता का बोध होता है। इसकी जगह संस्कृत में *अन्यथासमर्थ:* पद का प्रयोग यहाँ किया गया है। *अङ्गुलीयकम् प्राप्तम्* शीर्षक दूसरा



संवादात्मक पाठ महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध नाटक *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* का अंश है। विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए इसकी भाषा सरल करके यहाँ दी गई है। कारण, यह पुस्तक भाषा-शिक्षण का प्रथम सोपान ही है। उत्तरोत्तर कक्षाओं में भाषा कौशल सीखते हुए विद्यार्थी अपेक्षाकृत जटिल अभिव्यक्तियों को सहज रूप से ग्रहण कर पाएँगे।

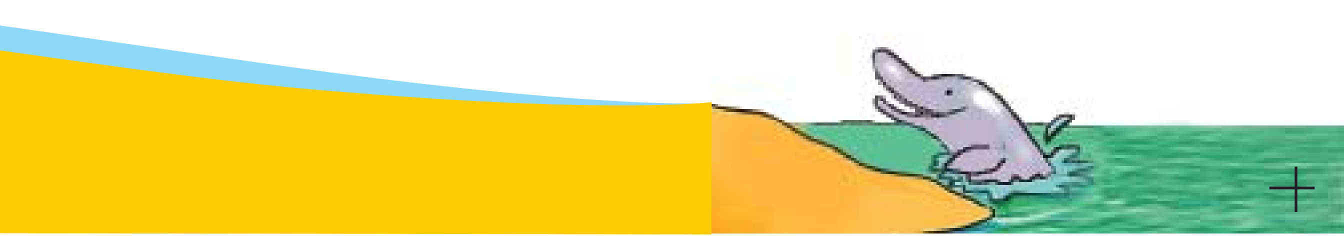
इस पुस्तक के प्रारम्भिक तीन पाठों में ऐसे शब्दों को समेटने का प्रयास किया गया है जो विद्यार्थियों के दैनंदिन जीवन से जुड़े हैं। कुछ रूढ़िबद्ध धारणाओं से अलग हटकर नई भूमिकाओं में लोगों को दिखाया गया है। यथा *चालिका* शब्द। इसके साथ दिया गया चित्र अर्थ का विस्तार करते हुए टैक्सी चलाती स्त्रियों को दर्शाता है। यद्यपि सामाजिक रूढ़ियों के कारण उनकी संख्या कम है। इसी तरह घर की कोई एक परिकल्पना नहीं होती। गृहविहीन लोगों के लिए विश्रामगृह के रूप में रैनबेसरा ही घर है। उसे पुस्तक में जगह दी गई है।

कठिन शब्दों का अर्थ-बोध कराने हेतु छात्रों की सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में दिया गया शब्दार्थ (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी) इस पुस्तक की विशेषता है। पुस्तक के अन्त में *परिशिष्ट* रूप में कारक और विभक्तियों का सामान्य परिचय दिया गया है जिससे छात्र इनके अन्तर को समझ सकें। पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास भी केवल तथ्यात्मक नहीं है। विद्यार्थी पाठों में उठाए गए विचारों पर ध्यान दें और अपने अनुसार उसे समझने का प्रयास करें, यही अपेक्षा है। इसमें शिक्षक-शिक्षिकाओं की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है।

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और सुरुचिपूर्ण क्यों न हो, अध्यापन-कार्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ अध्यापन की सफलता के लिए तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए यथावसर दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका विद्यार्थियों से अभिनय भी कराया जा सकता है।

यद्यपि इस संकलन को विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, तथापि इसको और अधिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।



राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे!

हमारा राष्ट्र-गान रवीन्द्रनाथ टैगौर द्वारा मूलत: बांग्ला भाषा में रचा गया था। भारत के राष्ट्र-गान के रूप में इसके हिंदी रूपांतरण का अंगीकार संविधान सभा द्वारा 24 जनवरी 1950 को किया गया।

पाठानुक्रमणिका

